ISSN : 2456-8856

पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/09510 डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2024-2026 उज्जैन (म.प्र.)

UGC Care Listed and Peer Reviewed Referred Bilingual Monthly International Research Journal

प्रेषण दिनांक 30 पृष्ठ संख्या 28

आश्वस्त

वर्ष 26, अंक 250 अगस्त 2024

हार्दिक शुभकामनाएँ

संपादक – डॉ. तारा परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

आश्वस्त

वर्ष : 26 अंक 250
अगस्त 2024

आश्वस्त

(सन् 1983 से निरंतर प्रकाशित)

RNI No.: MPHIN/2002/09510
ISSN : 2456-8856

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन (पंजीयन क्रमांक 2327 दिनांक 13/05/1999) की मासिक पत्रिका

संस्थापक सम्पादक
डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

संरक्षक
सेवाराम खाण्डेगर
11/3, अलखनन्दा नगर, बिड़ला हॉस्पिटल के पीछे,
उज्जैन मो.: 98269-37400

परामर्श
आयु. सूरज डामोर IAS
पूर्व सचिव-लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण वि.
म.प्र.शासन, भोपाल मो. 094253-16830

सम्पादक
डॉ. तारा परमार
9-बी, इन्द्रपुरी, सेठी नगर, उज्जैन-456010
मो. 94248-92775

सम्पादक मण्डल :
डॉ. जयप्रकाश कर्दम, दिल्ली
डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, गुजरात
डॉ. जसवंत भाई पण्ड्या, गुजरात
डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, म.प्र.

Peer Review Committee
डॉ. श्रवणकुमार मेघ, जोधपुर(राजस्थान)
प्रो. दत्तात्रय मुरुमकर, मुंबई (महाराष्ट्र)
प्रो. रहिम श्रीवास्तव, उज्जैन (म.प्र.)
डॉ. बी.ए.सावंत, सांगली (महाराष्ट्र)

कानूनी सलाहकार
श्री खालीक मन्सूरी एडव्होकेट, उज्जैन

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1	अपनी बात	डॉ. तारा परमार	3
2	The School Climate : A Neglected Aspect of Teaching - Learning in Government's School	Tasneem Ahmad (Research scholar)	4
3	प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्म संप्रत्यय एवं शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में एक अध्ययन	डॉ. राजकुमारी गोला सहायक प्रोफेसर कु. मोनिका शोधार्थिनी	8
4	मिडिल स्टेल पर अध्ययनरत सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का अध्ययन	डॉ. राजकुमारी गोला सहायक प्रोफेसर उमरा इदरीस शोध छात्रा	11
5	जंगें आज़ादी में उर्दू कलमकारों का हिस्सा	डॉ. मो. अज़हर देरीवाला	14
6	दलित उत्पीड़न और धर्मांतरण का सटीक आख्यान है : दिल्ली की गद्दी पर खुसरो भंगी	विवेक कुमार	16
7	दलित कविता : सामाजिक न्याय और अधिकार की पुकार	डॉ. श्यौराजसिंह बेचैन सीनियर प्रो. हिन्दी विभाग, डी.यू.	18
8	स्वाधीनता आंदोलन और खड़ी बोली हिन्दी का साहित्य	देवेन्द्र भारती शोधार्थी डॉ. दुर्गेश कुमार राय शोध निदेशक	21
9	दिव्यांगजनों के लिए ई-सेवाओं की उपयोगिता	डॉ. संतोष पाटीदार	24
10	हम लड़ रहे हैं (कविता)	डॉ. खन्ना प्रसाद अमीन	26

UGC Care Listed Journal
खाते का नाम - आश्वस्त (Ashwast)
खाते का नं.- 63040357829
बैंक - भारतीय स्टेट बैंक,
शाखा- फ्रीगंज, उज्जैन (Freeganj, Ujjain)
IFS Code - SBIN0030108

Web : www.aashwastujjain.com
E-mail : aashwastbdsamp@gmail.com

एक प्रति का मूल्य	:	रुपये 20/-
वार्षिक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 200/-
आजीवन सदस्यता शुल्क	:	रुपये 2,000/-
संरक्षक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 20,000/-

विशेष : सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबंध अवैतनिक तथा पत्रिका में प्रकाशित विचारों से सम्पादक-मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र उज्जैन रहेंगा।

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्म समप्रत्यय एवं शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में एक अध्ययन

– डॉ. राजकुमारी गोला (सहायक प्रोफेसर)
– कु. मोनिका (शोधार्थिनी)

सार–मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक विकास की अनेक अवस्थायें होती है। पूर्व शैशवावस्था, बाल्यवस्था, किशोरावस्था, युवावस्था, प्रौढावस्था तथा वृद्धावस्था। मानवविकास की विभिन्न अवस्थाओं में किशोरावस्था सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवस्था है। विकासात्मक मनोवैज्ञानिकों ने किशोरावस्था को अधिक महत्वपूर्ण अवस्था बताया है इस अवस्था में किशोरों में महत्वपूर्ण शारीरिक विकास, सामाजिक विकास, संवेगात्मक विकास, मानसिक विकास तथा संज्ञानात्मक विकास होते है। यह वह अवस्था है जिसका छात्रों में तात्कालिक प्रभाव तथा दीर्घकालिन प्रभाव दोनों ही देखने को मिलता है। इस अवस्था में शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनों तरह के प्रभाव बहुत स्पष्ट रूप से उभरकर आते है। इन्ही तथ्यों को दृष्टिगत करते हुए प्रस्तुत शोध पत्र में विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया है सर्वेक्षण पद्धति के अन्तर्गत प्रतिदर्श विधि द्वारा 286 छात्र एवं छात्राओं का चयन किया गया है।

बीजक शब्द : आत्म सम्प्रत्यय, शैक्षिक उपलब्धि, संवेग, नैतिक एवं आध्यात्मिक।

प्रस्तावना : शिक्षा मानव जीवन के विकास की महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो जन्म से लेकर जीवन पर्यन्त तक चलती रहती है। यह व्यक्ति और समाज दोनों के विकास में अपना योगदान देती है। शिक्षा का कार्य मानवीय जीवन को सुखमय, संपन्न और समृद्ध बनाना है, इसके लिये शिक्षा मानव का शारीरिक, बौद्धिक, सांवेगिक, आध्यात्मिक और नैतिक विकास करती है और उनकी आवश्यकताओं, आकांक्षाओं, मूल्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान देती है। प्रत्येक बालक कुछ वंशानुगत शक्तियों को लेकर पैदा होता है । सामाजिक पर्यावरण में रहकर इन शक्तियों का विकास होता है। पर्यावरण में रहकर बालक अनेक क्रियायें करता है जिससे उसे नये अनुभव प्राप्त होते हैं। इन अनुभवों के अनुसार ही वह अपने व्यवहार में परिवर्तन तथा सुधार भी करता है । जिस बालक को जितने अधिक अनुभव प्राप्त होते है, उसका विकास भी उतना ही अधिक होता है। परिवर्तन व विकास की इस प्रक्रिया को ही शिक्षा कहा जाता है। बालक प्रेम, जिज्ञासा, कल्पना, आत्म–सम्मान आदि मूल प्रवृत्तियों को लेकर पैदा होता है। शिक्षा इन मूल प्रवृत्तियों का समुचित विकास करती है । शिक्षा के अभाव में ये प्रवृत्तियाँ अविकसित रहती है जिससे बालक के व्यक्तित्व का विकास संतुलित रूप में नहीं हो पाता। कुछ प्रवृत्तियाँ पाशविक होती है, शिक्षा इन प्रवृत्तियों पर नियंत्रण करना उनका मार्गान्तीकरण करना और सुधार करना सिखलाती है। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिये व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, नैतिक विकास आवश्यक है। ज्ञान को विस्तृत करने और अपने दृष्टिकोण को विशाल बनाने के लिये मानसिक विकास आवश्यक है। शिक्षा इन सभी पक्षो का संतुलित विकास करती है। विद्यार्थियों की महत्त्वाकांक्षा एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा के स्तर पर भी अधिगम प्रक्रिया की सफलता काफी सीमा तक निर्भर करती है। अगर किसी विद्यार्थी में किसी भी प्रकार से आगे बढ़नें या उपलब्धि हासिल करने की कोई महत्त्वाकांक्षा या अभिप्रेरणा ही नहीं होगी तो वह किसी बात को सीखने की कोशिश भी नहीं करेगा। जो जितना पाने की इच्छा करता है. वह उसके लिये उतना ही प्रयत्न भी करना चाहेगा। जिनमें उपलब्धि की आवश्यकता सुदृढ होगी वे अपने आप में सुधार करने

का भी प्रयास करते है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व : शिक्षा सामाजिक शैली को प्रतिबिन्धित करती है। शिक्षा को जीवन से पृथक नहीं किया जा सकता। यदि प्रगति ही जीवन है तो शिक्षा इस प्रगति को उचित दिशा में नियंत्रित एवं संचालित करती है तथा बालक को उसके पर्यावरण के साथ समायोजन करना सिखाती है। यदि बालक में समायोजन करने की क्षमता नहीं होगी तो वह उसके व्यक्तित्व के विकास में बाधा उत्पन्न करेगी। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बालक की कुशलता एवं दक्षता के मापन के आधार पर उन्हें उपलब्धि प्राप्त करने के समुचित अवसर प्रदान करना है। प्रत्येक बालक के जीवन की सफलता उनके मानसिक, सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक कारको आदि से प्रभावित होती है। यह सभी कारक बालक के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उपलब्धि प्राप्त करने हेतु एक महत्वपूर्ण अभिप्रेरक का कार्य करते है। अतः अभिप्रेरणा का जीवन की सपूर्ण उपलब्धि के साथ घनिष्ट सम्बंध होता है । विद्यार्थियो के आत्म सम्प्रत्य एवं शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन करना प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है।

शोध समस्या कथन : "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय एवं शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में एक अध्ययन"–

शोध अध्ययन के उदेश्य : –

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय का अध्ययन करना ।

2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना ।

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें :–

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नही है।

2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है ।

शोध अध्ययन विधि : प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि के अन्तर्गत प्रतिदर्श विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन की जनसंख्या एवं न्यादर्श – प्रस्तुत अध्ययन में मुरादाबाद जनपद के समस्त माध्यमिक शिक्षण संस्थाओं को जनसंख्या माना गया है। शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध कार्य के लिए न्यादर्श का आकार कुल जनसंख्या का 10 प्रतिशत रखने का निर्णय लिया है, जिसमें कुल 286 छात्र एवं छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ताओं ने आर. के. सारस्वत द्वारा निर्मित आत्म सम्बोध प्रश्नावली का प्रयोग किया है ।

शोध अध्ययन का सीमांकन : प्रस्तुत अध्ययन की भी कुछ सीमाएं निश्चित की गई है, जो कि राज्य सरकार द्वारा संचालित मुरादाबाद जनपद के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के कक्षा 10 के विद्यार्थियों को चयनित किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

परिकल्पना– 1. 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नही है।' इस सम्बन्ध में निर्मित तालिका संख्या 1 प्रस्तुत है –

तालिका संख्या – 1

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय का विश्लेषण

परिगणित मूल्य	आत्म सम्प्रत्यय का विश्लेषण

	छात्र	छात्राऐं
विद्यार्थियों की संख्या	260	26
माध्य	133.00	132.87
प्रमाणिक विचलन	44.97	38.52
माध्य अन्तर	0.12	
प्रमाप विभ्रम	7.97	
क्रान्तिक अनुपात	0.01	
सारणी मूल्य (0.5 स्तर पर)	1.96	
सार्थकता	0.01<1.96 (निरर्थक)	
परिकल्पना	स्वीकृत	

तालिका स० 1 से स्पष्ट है कि छात्रों के औसत प्राप्ताकं 133.00 तथा छात्राओं के औसत प्राप्ताकं 132. 88 है। दोनों का माध्य अन्तर 0.12 है । माध्य अन्तर का प्रमाप विभ्रम 7.97 है। परिगणित क्रान्तिक अनुपात 0.01 है जो 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर निर्धारित सारणी मूल्य 1.96 से कम है। अतः अन्तर सार्थकता के 0.05 स्तर पर निरर्थक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना स्वीकृत हुई है कि "माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।" तालिका संख्या 1 से ज्ञात होता है कि छात्रों एवं छात्राओं के आत्म–सम्प्रत्यय प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 133.00 एवं 132. 87 हैं तथा मानक विचलन क्रमशः 44.97 एवं 38.52 है । सांख्यिकीय विश्लेषण करने पर टी – मान 0.01 प्राप्त हुआ जो 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना छात्रों एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, स्वीकार की जाती है। अर्थात दोनों मध्यमान सार्थक रुप से भिन्न नहीं है। मध्यमानों में जो भी अन्तर दिखाई देता है वह संयोगवश है।

परिकल्पना– 2. 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।' इस सम्बन्ध में तालिका सं. 2 प्रस्तुत है –

तालिका संख्या – 2
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का विश्लेषण

परिगणित मूल्य	शैक्षिक उपलब्धि का विश्लेषण	
	छात्र	छात्राऐं
विद्यार्थियों की संख्या	200	20
माध्य	52.91	50.76
प्रमाणिक विचलन	7.28	7.05
माध्य अन्तर	2.15	
प्रमाप विभ्रम	1.46	
क्रान्तिक अनुपात	1.48	
सारणी मूल्य (0.5 स्तर पर)	1.96	
सार्थकता	1.48<1.97 (निरर्थक)	
परिकल्पना	स्वीकृत	

परिकल्पना परीक्षण के लिए छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित प्राप्तांकों के माध्य अंक अलग–अलग ज्ञात करके उनका प्रमाप विचलन ज्ञात कर, प्रमाप विभ्रम के द्वारा क्रान्तिक अनुपात ज्ञात किया गया है। तालिका स. 2 से स्पष्ट है कि छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित औसत प्राप्तांक क्रमशः 52.91 तथा 50.76 हैं तथा प्रमाप विचलन क्रमशः 7.28 एवं 7.05 है। दोनों मध्यमानों की तुलना करने पर टी – मान 1.48 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।, स्वीकार की जाती है ।

शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष :–

परिकल्पनाओं का परीक्षण करने के पश्चात निष्कर्ष प्राप्त होता है कि छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में कोई साथर्क अन्तर नहीं है। अर्थात छात्र एवं छात्राओं का आत्म सम्प्रत्य समान स्तर का पाया गया। छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय सार्थक अन्तर नहीं है । अर्थात छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में कोई विशेष अन्तर नहीं है, जो भी अन्तर दृष्टिगोचर हो रहा है वह संयोगवश है। छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि छात्राओं की अपेक्षा अधिक उच्च है। छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में छात्राओं की अपेक्षा सकारात्मक प्रबलता है। छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि छात्राओं से अधिक सकारात्मकता लिये है।

– डॉ. राजकुमारी गोला
सहायक प्रोफेसर
शिक्षा विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

– कु. मोनिका शोधार्थिनी
शिक्षा विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद
मोबा. 7668206043